दिविशा

अंक : चतुर्थ ! वर्ष : 2025-26

जुलाई से दिसंबर

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं॰ लि॰
The Oriental Insurance Co. Ltd.

क्षेत्रीय कार्यालय - इंदौर

चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण भवन , 7- रेस कोर्स रोड, इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

क्षे॰ का॰ इंदौर रंगोली

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर टीम

संरक्षक
संजीब एड्डी
उप महा प्रबन्धक

मार्गदर्शक
तिलक राज़
क्षेत्रीय प्रबन्धक

संपादक
पम्मी शिंदे वासुरे
राजभाषा अधिकारी

सम्पादकीय पता :
दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय - चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण भवन ,
7-रेस कोर्स रोड, इंदौर – 452002

ई-मेल :
pammi.shinde@orientalinsurance.co.in

गृह पत्रिका केवल आंतरिक वितरण के लिए है । पत्रिका मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार है , तथा संपादक मण्डल का पत्रिका मे व्यक्त विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

अनुक्रमणिका

- उपमहाप्रबन्धक का संदेश 4
- क्षेत्रीय प्रबन्धक (राजभाषा) का संदेश 5
- क्षेत्रीय प्रबन्धक का संदेश 6
- संपादकीय 7
- राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय 8
- राजभाषा विभाग के प्रमुख कार्य 9
- राजभाषा नियम 1976 10
- ख्वाहिशें 11
- आधा संडे 12
- IRDA शिकायत विभाग – सीएसडी 13
- मोहब्बत का अखबार आया है 15
- जानिए भारत के सबसे स्वछ शहर इंदौर के बारे में 16
- इंदौर की ऐतिहासिक इमारते 17
- राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका 18
- स्वैच्छिक और अनिवार्य 20
- नदी 20
- कर्मयोगी 21
- अखिल भारतीय हिन्दी अधिकारी सम्मेलन 22
- क्षे॰ का॰ इंदौर को अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड.... 23
- क्षे॰ का॰ इंदौर तकनीकी विधि विभाग पुरस्कार 23
- सुकून है 24
- जीवन का संतुलन 24
- दस्तक उम्मीदों की 25
- हिन्दी शब्द सिंधु का परिचय 26
- वो बेफिकर सी मैं 27
- नारी सशक्तिकरण और माँ कविता 28
- भारत की प्रगति मे महिलाओं की भूमिका 29
- पाखण्ड 31
- बेटी 31
- हिन्दी कार्यशालाएँ 32
- विभिन्न न. रा. का. स. बैठकें 33
- ओ.आई.सी.एल. स्थापना दिवस 34
- हिन्दी पखवाड़ा 2025-26 35
- न.रा.का.स. द्वारा प्राप्त पुरस्कार 36
- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षे.का. इंदौर का निरीक्षण 37
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 38
- क्षेत्रीय कार्यालय विविध गतिविधियां 39

ओरिएंटल स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज , फरीदाबाद

****

अखिल भारतीय हिन्दी अधिकारी सम्मेलन वर्ष 2025-26

****

*****हिन्दी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है *****

उपमहाप्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर

उपमहाप्रबंधक की कलम से .....

साथियों ,

हमारे कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका "दिविशा" के चतुर्थ अंक प्रस्तुत करते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है । विविधताओं से भरे देश मे हिन्दी ने अपनी प्रामाणिकता सिद्ध की है । यह राष्ट्रीय एकता और पहचान का प्रतीक है । विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने के साथ यह समृद्ध साहित्य और परम्पराओं को भी सँजोता है । हिन्दी भाषा ने देश के विकास मे महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । फिल्मों, रंगमंच नाटकों और टी.वी. पर प्रसारित हो रहे कई कार्यक्रमों की भाषा हिन्दी है । अब यह सिर्फ हिन्दी भाषियों की भाषा नहीं रही अपितु इसने विदेशों मे भी सम्मानजनक पहचान बनाई है ।

हमारे क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर ने भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र मे उत्कृष्ट कार्य करते हुए अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय प्रधान कार्यालय द्वारा "क" क्षेत्र के लिए अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड 2024-25 मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया है । यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है ।

मुझे खुशी है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को समस्त कार्यालयों के कार्मिकों की भावनाओं एवं विचारों को जानने का सुअवसर प्राप्त होगा । आपके सहयोग से गृह पत्रिका का यह चतुर्थ अंक प्रकाशित होने जा रहा है । पत्रिका के अंक को ज्ञानवर्धक एवं रुचिपुर्ण बनाने के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

शुभकामनाओं सहित .....

(संजीब ऐड्डी)

उपमहाप्रबंधक

क्षेत्रीय प्रबन्धक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

क्षेत्रीय प्रबन्धक की कलम से .....

यह हर्ष का विषय है कि हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका "दिविशा" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा स्थापित राजभाषा नीति एवं समय-समय पर जारी दिशा-निदेशों का अनुपालन करना हम सभी का नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

विगत कुछ माह पूर्व संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के माननीय सदस्यों द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर का राजभाषायी निरीक्षण किया गया एवं निरीक्षण के दौरान कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए, जिसके लिए हम सभी को गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है।

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा वित्तीय वर्ष **2024-25** के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर को पुरस्कृत किया जाना एवं अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड मे 'क' क्षेत्र मे द्वितीय स्थान से पुरस्कृत करना दर्शाता है कि कार्यालय में राजभाषा का प्रसार प्रचार सही दिशा में हो रहा है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रयोग को बढावा मिलेगा एवं हम ओरिएंटल परिवार के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को जोड़े रखने में कामयाब होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी तरफ से सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

(तिलक राज)

क्षेत्रीय प्रबन्धक

क्षेत्रीय प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

क्षेत्रीय प्रबन्धक की कलम से .....

यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं॰ लि॰ , क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर अपनी राजभाषा गृह पत्रिका "दिविशा" के चतुर्थ अंक प्रकाशन कर रहा है।

हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। यह जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी जाती है। इसके उच्चारण व लिखावट में जितनी समानता है, उतनी किसी अन्य भाषा में नहीं है। यह पत्रिका निश्चित रूप से कार्यालय के सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं अभिरुचि दर्शाने का माध्यम सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए, पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(एल॰ एस॰ कनोज)

क्षेत्रीय प्रबन्धक

पम्मी शिंदे वासुरे
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर

संपादकीय .....

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर कि गृह पत्रिका का ई-संस्करण प्रबुद्ध पाठकों को सहर्ष समर्पित है । उम्मीद है पाठको के लिए यह अंक रोचक एवं ज्ञानवर्धक साबित होगा । मानव सभ्यता के विकास मे भाषा की सबसे बड़ी भूमिका है । भाषा नदी के समान है । यह संवाद से आगे बढ़ती है और फलती-फूलती है । हिन्दी भाषा देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है । वर्तमान ई-पत्रिका के अंक में पाठको के लिए राजभाषा विभाग के दायित्व और महत्त्व को मुख्य तौर पर शामिल किया गया है साथ ही क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर के समस्त कर्मचारियों द्वारा प्रेषित लेख, कहानी, कविताएं आदि को यथासंभव संलग्न करने का प्रयास किया गया है । क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियों जैसे संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण, हिन्दी पखवाड़ा एवं विभिन्न मंचों पर कार्मिकों को प्राप्त पुरस्कार इत्यादि को भी इस अंक मे संकलित किया गया है । हमारे क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर को प्राप्त अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड एवं विधि विभाग इंदौर को प्राप्त स्टार पर्फ़ोर्मर की झलकियाँ भी इस पत्रिका के माध्यम से पाठको तक पंहुचाई जा रही है ।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार-प्रसार और राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हम सब का संवैधानिक कर्तव्य है, जो हम अच्छी तरह से निभा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हम सब के सतत प्रयासों से हमारी इस पत्रिका को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा । आशा करते है कि यह अंक आपको पसंद आएगा । आपकी प्रतिक्रियाओं एवं बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ।

सादर .....

सत्यमेव जयते

राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF
OFFICIAL LANGUAGE

राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय

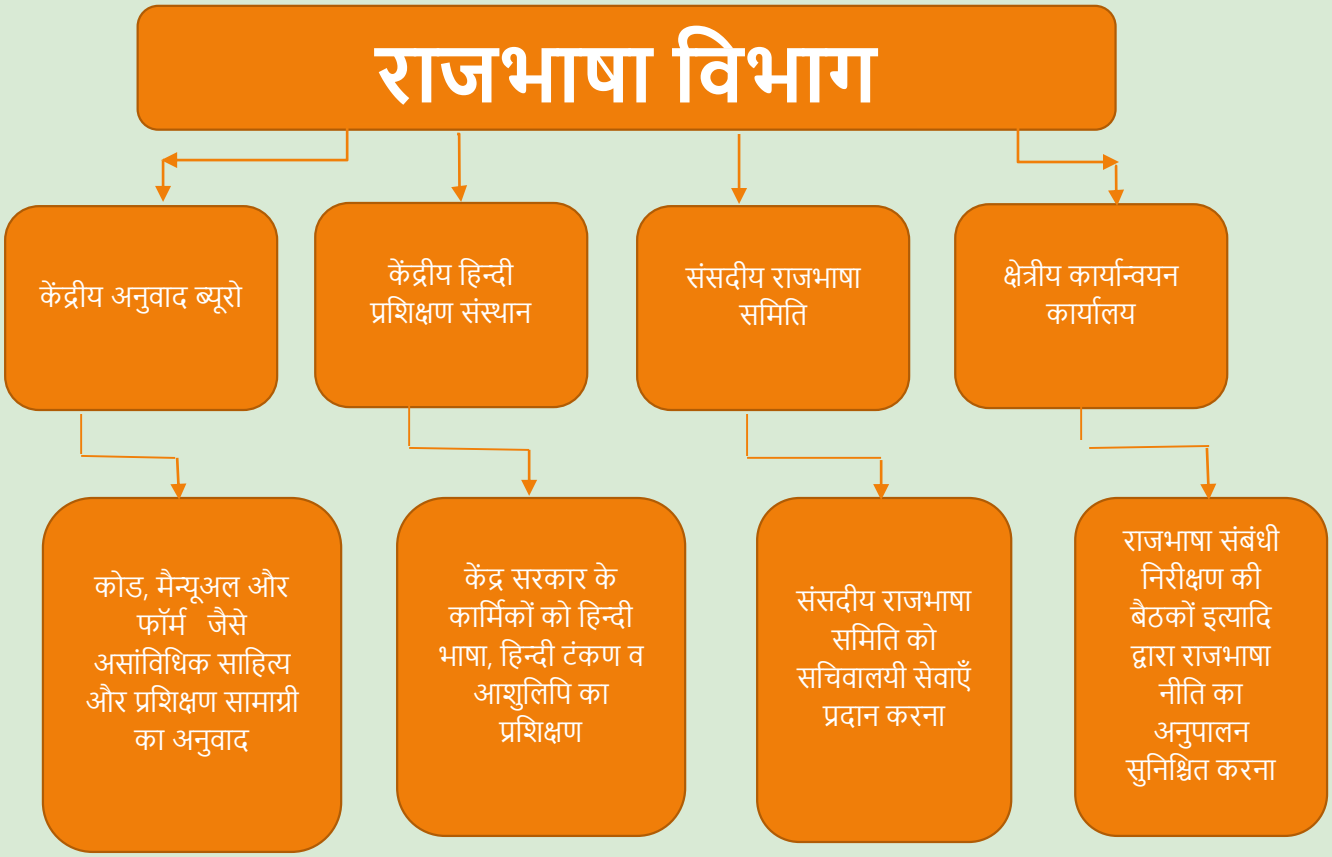

राजभाषा विभाग के प्रमुख कार्य

राजभाषा विभाग के मुख्य कार्य संविधान और कानूनों के अनुसार हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए नीति निर्धारण और समन्वय करना, हिंदी प्रशिक्षण और शब्दावली का विकास करना, और हिंदी में अनुवाद व प्रकाशन सुनिश्चित करना है, ताकि केंद्र और राज्यों के सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रभावी क्रियान्वयन हो सके। मुख्य कार्य:

नीति निर्धारण : राजभाषा नीति का निर्धारण और केंद्र व राज्यों के बीच समन्वय स्थापित करना ।

प्रशिक्षण और प्रचार ; सरकारी कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रशिक्षण और परीक्षाओं का आयोजन करना, तथा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएँ और कार्यक्रम चलाना ।

अनुवाद और शब्दावली : राजकीय साहित्य, गजेटियर और कानूनी दस्तावेजों का हिन्दी में अनुवाद करना, पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण, संकलन और प्रचार करना ।

कार्यान्वयन की निगरानी : सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोगो की प्रगति का निरीक्षण करना और वार्षिक लक्ष्यों का निर्धारण करना ।

संवैधानिक प्रावधानों का पालन : राजभाषा अधिनियम 1963 और नियमों के प्रावधनों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना ।

साहित्यिक एवं प्रकाशन कार्य : "राजभाषा " जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित करना और हिन्दी में लेखन को प्रोत्साहित करना ।

समन्वय : केंद्रीय हिन्दी समिति, संसदीय राजभाषा समिति और अन्य संबन्धित समितियों के कार्यों का समन्वय करना, संक्षेप में , यह विभाग हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित करने और उसके प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है ।

राजभाषा नियम 1976

राजभाषा नियम 1976 भारत सरकार के कामकाज में हिंदी के उपयोग को नियंत्रित करते हैं, जिसमें 12 नियम हैं जो केंद्र सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार, हिंदी में प्राप्त पत्रों का जवाब, मैनुअल और स्टेशनरी की भाषा, और कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रवीणता के स्तर (जैसे "प्रवीण" और "कार्यसाधक ज्ञान") को निर्धारित करते हैं, और ये नियम राज्यों को भाषा के आधार पर 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्रों में विभाजित करते हैं, जिसका उद्देश्य हिंदी और अंग्रेजी दोनों के उपयोग को संतुलित करना है, खासकर क्षेत्र 'क' और 'ख' में.

आधार:

ये नियम राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 और 8 के तहत बनाए गए हैं और इनमें 1987, 2007 और 2011 में संशोधन हुए हैं.

क्षेत्रीय वर्गीकरण:

- भारत को भाषाई आधार पर तीन क्षेत्रों में बांटा गया है:
- क्षेत्र 'क': बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, और दिल्ली, अंडमान निकोबार द्वीप समूह.
- क्षेत्र 'ख': गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली.
- क्षेत्र 'ग': वे सभी राज्य जो 'क' और 'ख' में नहीं आते .

पत्राचार:

- क्षेत्र 'क' और 'ख' के कार्यालयों के बीच पत्राचार हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है, लेकिन हिंदी में प्राप्त पत्रों का जवाब हिंदी में देना होता है.
- क्षेत्र 'क' के कार्यालयों से 'क' और 'ख' के राज्यों को भेजे जाने वाले पत्र हिंदी में होंगे, और यदि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं, तो उनका हिंदी अनुवाद भी होगा (अपवादों को छोड़कर).
- 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों से 'क' या 'ख' के राज्यों को भेजे जाने वाले पत्र अंग्रेजी में होंगे, लेकिन हिंदी में भी हो सकते हैं, बशर्ते कार्यालयों में हिंदी जानने वाले कर्मचारी हों.

कर्मचारी की प्रवीणता:

- प्रवीण: मैट्रिक या समकक्ष परीक्षा हिंदी माध्यम से पास की हो या हिंदी में प्रवीणता (नियम 9).
- कार्यसाधक ज्ञान (प्रॉफिशिएंट): नियम 10 में परिभाषित.
- दस्तावेज़ और स्टेशनरी द्विभाषी होना चाहिए ।
- मैनुअल, कोड, रजिस्टर, नामपट्ट, साइनबोर्ड, लेटर-हेड आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों में द्विभाषी (diglot) रूप में होने चाहिए.

अनुपालन का उत्तरदायित्व:

पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं कि हिंदी और अंग्रेजी दोनों में दस्तावेज तैयार किए जाएं. संक्षेप में, ये नियम सुनिश्चित करते हैं कि हिंदी का उपयोग सरकारी कामकाज में बढ़े, खासकर उन क्षेत्रों में जहां हिंदी मुख्य भाषा है, और यह अंग्रेजी के साथ संतुलन बनाए रखता है.

ख्वाहिशें

सूरज की किरण, पेड़ों की छांव में
धरती की गोद, बारिश की नांव में,
बिना ख़्वाहिश के जन्म लिया, एक सुसुप्त से बीज ने
चल पड़ा वो अकेले, जीवन की रीत में

चारो तरफ निहारता, खेलता वो धूप से
पल-पल सरोकार करता, प्रकृति के रूप से
फिर बचपन के उस पार चला, नवयौवन के सागर मे
ख्वाहिशों का जन्म हुआ, अथाह मन के गागर मे

असीम शक्ति का स्वामी, मन उसका हुंकार भरता
प्रत्येक ख़्वाहिश करूँ पूरी, यह अहंकार मन में पलता
निरीह समझ दूसरों को, अनवरत वो आगे बढ़ता
अनगिनत कर्म करके, नए विचार मन मे गढ़ता

अब धूप भी उसको चुभती है, छांव भी अडचण लगती है
कब धरती की गोद मिले, और छांव का सहारा
वह अंकुरित सा सुसुप्त बीज, ख़्वाहिशों की दौड़ में
बेतहाशा भागता रहा, अब कदम रखा प्रोढ़ में

अन्तर्मन की गोद में, सोचता वह दुबारा
कब धरती की गोद मिले, और छांव का सहारा
बिखर गया मन का महल, बहुत कुछ पीछे छुट गया
ख़्वाहिशों के बोझ में , अन्तर्मन भी टूट गया

सोचता हूँ वापस पा लूँ, अतीत अंकुरित व्यवस्था को
पर जीवन की डोर ले चली, अब आखिरी अवस्था को
अंकुरण से प्रोढ़ तक, ख़्वाहिशों ने सफर किया
कुछ पूरी, कुछ अधूरी के बीच में, उस बीज का जीवन गुजर गया ।

ओम प्रकाश प्रजापति
वरिष्ठ व्यवसाय प्रबन्धक
शाखा कार्यालय – मंदसौर

आधा संडे

पिता को घर से बाहर निकलता देख नौ वर्षीय गुड़ियाँ ने अपनी माँ से पूछा – " माँ, बापू हर दिन काम पर क्यों जाते है ?

"बापू अगर काम पर नहीं जाएंगे तो पैसे नहीं आएंगे, और पैसे नहीं आएंगे तो हम खाना कैसे खाएँगे ? " माँ ने गुड़ियाँ को समझाया ।

"हर दिन जाना पड़ता है ।" गुड़ियाँ ने फिर से पूछा ।" हाँ , काम पर तो जाना ही होता है", माँ ने कुछ अनमने ढंग से कहा , "लेकिन माँ वो सामने वाली बिल्डिंग मे जहां आप काम करती हो वहाँ के साहब तो हर रोज़ काम पर नहीं जाते है ।"

गुड़ियाँ को असमंजस मे देखकर माँ ने कहाँ – "अरे उन साहब लोगों को हफ्ते में एक दिन आराम करने के लिए छुट्टी मिलती है , वो क्या कहते है – हाँ संडे !"

"तब तो साहब लोगों को संडे का पैसा नहीं मिलता होगा?" गुड़ियाँ ने तपाक से पूछा । "अरे ! ऐसा नहीं है , उस दिन का भी पैसा मिलता है, उन लोगों को ।" माँ ने गुड़ियाँ की ओर देखकर कहा ।

"लेकिन बापू को तो छुट्टी नहीं मिलती ।" तब माँ ने फिर समझाया "बेटा, हम दिहाड़ी मजदूर है, हमे सप्ताह के सातों दिन काम करना पड़ता है ।"

अगली शाम बहुत तेज़ बारिश हो रही थी, गुड़ियाँ के बापू काम से पाँच घंटे पहले वापस आ गए । शर्ट की जेब में रखी दिहाड़ी, पत्नी को देते हुए प्रसन्नता से बोले, "बारिश के कारण ठेकेदार ने पाँच घंटे पहले ही काम रोक दिया ।"

"लेकिन दिहाड़ी", पत्नी ने चिंतित होते हुए कहा । "अरे ! गुड़ियाँ की माँ चिंता मत करो, दिहाड़ी पूरी दी है ठेकेदार ने," गुड़िया के पिता ने जवाब दिया ।

पिता की बाते सुन गुड़ियाँ खुशी से अपने बापू के गले मिलते हुए चिल्लाई "ये ! आज तो बापू का संडे है । " गुड़िया की बाते सुनकर माँ और बापू दोनों मुस्कराते हुए एक साथ बोले " संडे नहीं, आधा संडे ' ।

अंजु अग्रवाल

सहायक प्रबन्धक

लेखा विभाग

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण
Insurance Regulatory and Development Authority of India

IRDA शिकायत विभाग – सीएसडी

पॉलिसीधारक के संबंध में शिकायत या शिकायत का क्या अर्थ है

शिकायत/अनुपालन को विशेष रूप से भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (पॉलिसीधारकों के हितों का संरक्षण) विनियम, 2017 के विनियम 4(4) में परिभाषित किया गया है, जो इस प्रकार है:

"शिकायत" या "शिकायत" का अर्थ है लिखित अभिव्यक्ति (इलेक्ट्रॉनिक मेल या अन्य इलेक्ट्रॉनिक स्क्रिप्ट के रूप में संचार शामिल है), एक शिकायतकर्ता द्वारा बीमाकर्ता, वितरण चैनलों, मध्यस्थों, बीमा मध्यस्थों या अन्य विनियमित संस्थाओं के साथ असंतोष की कार्रवाई या कमी के बारे में ऐसे बीमाकर्ता, वितरण चैनलों, बिचौलियों, बीमा मध्यस्थों या अन्य विनियमित संस्थाओं की सेवा के मानक या सेवा में कमी के बारे में कार्रवाई। **स्पष्टीकरण: एक जांच या अनुरोध "शिकायत" या "शिकायत" की परिभाषा के अंतर्गत नहीं आता है।** एक बीमा कंपनी को इसकी प्राप्ति के दो सप्ताह के भीतर शिकायत का समाधान करना आवश्यक है। यदि कोई ग्राहक किसी बीमा कंपनी या कंपनी से जुड़े किसी मध्यस्थ से नाखुश है, तो उसे पहले कंपनी के शिकायत निवारण अधिकारी से संपर्क करना चाहिए और शिकायत देनी चाहिए । आवश्यक समर्थन दस्तावेजों के साथ लिखित रूप में शिकायत देनी होगी।

यदि निर्धारित समय सीमा के भीतर शिकायत का समाधान नहीं होता है या बीमा कंपनी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है, तो कार्रवाई का तरीका क्या है

यदि शिकायत प्राप्त होने के दो सप्ताह के भीतर हल नहीं होती है या उस पर ध्यान नहीं दिया जाता है, या यदि बीमा कंपनी शिकायतकर्ता की संतुष्टि के अनुसार शिकायत का समाधान नहीं करती है, तो शिकायतकर्ता अपनी शिकायत आईआरडीएआई को भेज सकता है। IRDAI इसे संबंधित बीमा कंपनी के साथ उठाएगा और बीमा कंपनी द्वारा शिकायत और समाधान की पुन: जांच की सुविधा प्रदान करेगा।

निम्नलिखित में से किसी भी माध्यम से आईआरडीएआई में शिकायत दर्ज की जा सकती है:

टोल फ्री नंबर **155255/1800 425 4732** (यानी आईआरडीएआई शिकायत कॉल सेंटर) पर कॉल करना या

शिकायत @irda.gov.in पर ई-मेल भेजना ।

"IRDAI's Bima " पर शिकायत दर्ज करना भरोसा " **https://bimabharosa.irdai.gov.in/** पर ।

आईआरडीएआई की उपभोक्ता शिक्षा वेबसाइट **https://policyholder.gov.in/** में उपलब्ध शिकायत पंजीकरण फॉर्म भरे और यदि आवश्यक हो तो किसी भी पत्र या संलग्नक के साथ भेजें, और डाक या कूरियर द्वारा भेजें:

महाप्रबंधक,
पॉलिसीधारकों का संरक्षण और शिकायत निवारण विभाग,
भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI),
115/1 , वित्तीय जिला, नानकरंगुडा, गाचीबोवली , हैदराबाद - 500 032।

आईआरडीएआई शिकायत कॉल सेंटर क्या है

आईआरडीएआई शिकायत कॉल सेंटर को 20 जुलाई, 2010 को संभावनाओं और पॉलिसीधारकों के लिए व्यापक टेली-कार्यक्षमताओं के साथ एक सच्चे वैकल्पिक चैनल के रूप में लॉन्च किया गया था। कॉल सेंटर सोमवार से शनिवार सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक एक टोल फ्री, 12 घंटे X 6 दिन सेवा मंच के रूप में कार्य करता है। सेवाएं न केवल हिंदी और अंग्रेजी में बल्कि अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं में भी पेश की जाती हैं। कॉल सेंटर का टोल फ्री नंबर 155255/1800 425 4732 है और यह शिकायतों को दर्ज करने, उनकी स्थिति का पता लगाने और उन्हें आईआरडीएआई तक पहुंचाने का एक सस्ता, त्वरित और सरल तरीका है।

एकीकृत शिकायत प्रबंधन प्रणाली क्या है

IRDAI ने " बीमा भरोसा " लॉन्च किया जिसे पहले अप्रैल 2011 में "एकीकृत शिकायत प्रबंधन प्रणाली (IGMS)" के रूप में जाना जाता था। बीमा भरोसा एक व्यापक समाधान है जो न केवल प्रस्तावक या पॉलिसीधारक को केंद्रीकृत और ऑनलाइन पहुंच प्रदान करने की क्षमता रखता है बल्कि बाजार आचरण के मुद्दों की निगरानी के लिए आईआरडीएआई तक पूर्ण पहुंच और नियंत्रण प्रदान करता है, जिसमें प्रस्तावक या पॉलिसीधारक की शिकायतें मुख्य संकेतक हैं। सिस्टम में विशिष्ट शिकायत आईडी असाइन करने, संग्रहीत करने और ट्रैक करने की क्षमता सिस्टम ने लक्ष्य टर्नअराउंड टाइम्स (टीएटी) को परिभाषित किया है और सभी शिकायतों पर वास्तविक टीएटी को मापता है। बीमा भरोसा निर्धारित टर्नअराउंड समय के निकट लंबित कार्यों के लिए अलर्ट सेट करता है।

जिन प्रस्तावकों या पॉलिसीधारकों को शिकायत है, उन्हें पहले बीमा कंपनी के शिकायत निवारण चैनल में अपनी शिकायतें दर्ज करानी चाहिए। यदि वे किसी भी कारण से सीधे बीमा कंपनी तक नहीं पहुंच पाते हैं तो बीमा भरोसा बीमा कंपनियों के साथ शिकायत दर्ज करने और उनकी स्थिति को ट्रैक करने के लिए एक प्रवेश द्वार प्रदान करता है। बीमा के माध्यम से दर्ज कराई शिकायत भरोसा बीमा कंपनी के सिस्टम के साथ-साथ IRDAI रिपॉजिटरी में प्रवाहित होगा। इस प्रकार, बीमा भरोसा प्रस्तावक या पॉलिसीधारक की शिकायतों को हल करने के लिए सभी बीमा कंपनियों को एक मानक मंच प्रदान करता है और बीमा कंपनियों की शिकायत निवारण प्रणाली की प्रभावशीलता की निगरानी के लिए आईआरडीएआई को एक उपकरण प्रदान करता है। स्थिति का अद्यतनीकरण IRDAI प्रणाली में प्रतिबिंबित होगा। इसलिए, उद्योगव्यापी बीमा शिकायत डेटा का एक केंद्रीय भंडार बनाने के अलावा, बीमा भरोसा आईआरडीएआई के लिए एक शिकायत निवारण निगरानी उपकरण है।

आईआरडीएआई में शिकायतों का निपटारा कैसे किया जाता है

शिकायत एक अद्वितीय टोकन नंबर के साथ दर्ज की गई है। शिकायत टोकन नंबर के साथ शिकायत की पावती शिकायतकर्ता को ईमेल द्वारा भेजी जाती है या यदि कोई ईमेल आईडी पंजीकृत नहीं है, तो उसके डाक पते पर पत्र द्वारा भेजा जाता है। शिकायत का संक्षिप्त विवरण "बीमा भरोसा" पर दिया गया है । शिकायत से संबंधित दस्तावेजों को पकड़ लिया जाता है और समाधान के लिए बीमा कंपनी को भेज दिया जाता है। बीमा कंपनी को शिकायत की जांच करनी होती है और शिकायतकर्ता को जवाब देकर दो सप्ताह के भीतर उस पर ध्यान देना होता है। शिकायत पर की गई कार्रवाई को बीमा कंपनी द्वारा बीमा में अद्यतन किया जाना है भरोसा । शिकायत की स्थिति और की गई कार्रवाई का विवरण शिकायतकर्ता द्वारा बीमा से जांचा जा सकता है भरोसा या शिकायत को सौंपे गए टोकन नंबर का उपयोग करके आईआरडीएआई शिकायत कॉल सेंटर पर कॉल करके । यदि शिकायतकर्ता बीमा कंपनी द्वारा शिकायत पर ध्यान देने और की गई कार्रवाई को दर्ज करने के 8 सप्ताह के भीतर वापस नहीं आता है, तो बीमा कंपनी द्वारा शिकायत को बंद कर दिया जाएगा। अगर कंपनी 15 दिनों के बाद भी जवाब नहीं देती है या शिकायतकर्ता की गई कार्रवाई से संतुष्ट नहीं है, तो वह फिर से आईआरडीएआई को शिकायत भेज सकता है। इसके बाद IRDAI कंपनी के पास शिकायत को उसके समाधान और शिकायतकर्ता को जवाब देने के लिए उठाएगा। यदि शिकायतकर्ता बीमा कंपनी के समाधान से संतुष्ट नहीं है, तो वह बीमा लोकपाल या उपयुक्त कानूनी प्राधिकारी से संपर्क कर सकता है।

मोहब्बत का अखबार आया है .....

सुबह सवेरे आँखों की
दहलीज पर आया है ॥
मोहब्बत का अखबार आया है

किसी की बैचेनियां
तो किसी की शिकायतें लाया है
मोहब्बत का अखबार आया है

कल बालकनी में नज़रे मिली थी उनकी
आज देखों सुर्खियों में आया है
मोहब्बत का अखबार आया है

सूखे कुछ गुलाब जो बंद थे किताब में
उन कागजों की महक भी लाया है
मोहब्बत का अखबार आया है

जिनकी आँखें ही सिर्फ बढ़ा देती थी धड़कने
आज उनकी तस्वीर पहले पन्ने पर लाया है
मोहब्बत का अखबार आया है

जिन आँसूओं की कहानी रह गई थी अधूरी
उन्हे अपनी स्याही में पिरोकर लाया है
मोहब्बत का अखबार लाया है

हर चाय की चुस्की के साथ पढ़ रही हूँ
अरे ! देखूँ तो कहीं उसकी यादों में मेरा ख्याल भी आया है
मोहब्बत का अखबार आया है

दिलीप जाटवा
वरिष्ठ सहायक
क्षे॰ का॰ इंदौर

हिंदी हमारी ताकत है,
हिंदी एक विरासत है।

जानिए भारत के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर के बारे में .....

मध्यप्रदेश के मालवा के पठार पर इंदौर शहर स्थित है। इंदौर भारत की खूबसूरत जगहों में शुमार है। इसकी खूबसूरती का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इस जगह को मध्य प्रदेश का दिल कहा जाता है। चमचमाती नदियां, शांत झीलें और बुलंद पठार इस शहर की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। स्मारकों और स्थलों की सुंदरता इंदौर को खास बना देती है।

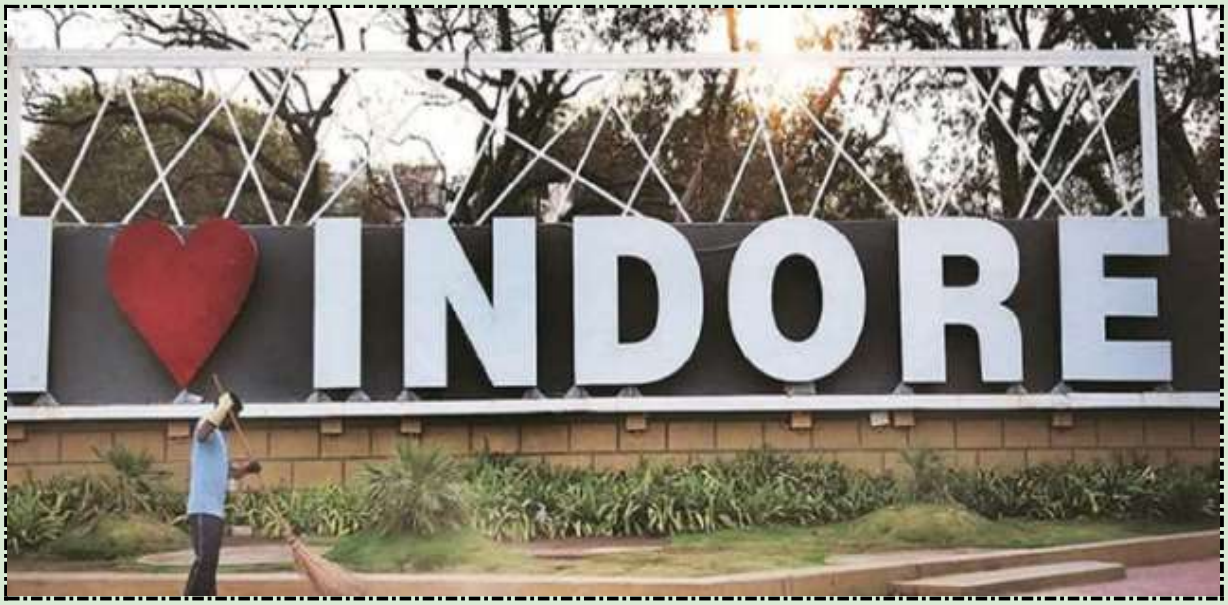

मध्य प्रदेश (Madhya Pradesh) की आर्थिक राजधानी और मिनी मुंबई के नाम से मशहूर इंदौर (Indore) शहर का इतिहास बहुत पुराना है. क्षिप्रा की सहायक नदी सरस्वती और कान्ह धाराओं पर स्थित इंदौर शहर मध्य प्रदेश का सबसे नामी शहर है. सन 1715 में स्थानीय ज़मींदारों ने इन्दौर को नर्मदा नदी घाटी मार्ग पर एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में बसाया था. पहले इन्दौर का नाम इन्दुर था, लेकिन 1741 में बने इंद्रेश्वर महादेव मंदिर के चलते नाम बदलकर इंदौर पड़ गया. 18वीं सदी में होलकर राजवंश के मल्हार राव होलकर ने इस शहर को विकसित किया था. होलकर कबीले के मल्हार राव होलकर ने दूसरे पेशवा बाजीराव प्रथम की तरफ से युद्ध पर विजय पाई थी जिसके फलस्वरूप 1733 में बाजीराव पेशवा ने मल्हार राव होलकर को पुरस्कार स्वरूप इंदौर शहर दे दिया था.

उन्होंने मालवा के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र को अपने कब्जे में लेने के बाद इंदौर को अपनी राजधानी बना लिया. उनकी मृत्यु होने के बाद गद्दी पर दो और शासक बैठे हालांकि तीसरी शासिका अहिल्या बाई होल्कर ने 1765 से 1795 ईसवी तक होल्कर राजवंश की ज़िम्मेदारी संभाली. इंदौर शहर 1818 में ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया. इंदौर शहर बहुत पुराना शहर है. 1715 के मध्य उज्जैन से ओंकारेश्वर यात्रा के बीच ये एक खुशनुमा पहाड़ हुआ करता था, लेकिन आज महानगर में तब्दील हो गया है. इंदौर शहर अब मुंबई का रूप लेता जा रहा है. स्वर कोकिला लता मंगेशकर का जन्म इसी शहर में हुआ था. शिक्षा के केंद्र के रूप में उभरे इंदौर शहर को मध्य प्रदेश की व्यावसायिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है. मालवा का सबसे बड़ा शहर इंदौर ही है.

औद्योगिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र

इंदौर मध्यप्रदेश का प्रमुख वाणिज्यक और औद्योगिक केंद्र इंदौर है और इसके आसपास 5 हजार से ज्यादा छोटे बड़े उद्योग स्थापित हैं. इनमें टाइल्स, सीमेंट, कपड़ा, रसायन, दवा, खेल के सामान, फर्नीचर के अलावा इलेक्ट्रानिक्स के उद्योग शामिल हैं. वहीं पुराने उद्योगों में तेल की मिलें, लाख की चूड़ियां, मिट्टी के बर्तन, बुनाई छपाई और रंगाई उद्योग शामिल हैं. गेहूं-मूंगफली और सोयाबीन के प्रमुख उत्पादक इंदौर शहर अपने मसालेदार भोजन एवं नमकीन उद्योग के लिए भी काफी प्रख्यात है.

एक ही शहर में IIM और IIT

इंदौर देश के उन शहरों में शामिल है, जहां आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थान हैं. शहर में सन 1964 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय बड़े शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ था. अन्य शैक्षणिक संस्थानों की यदि बात की जाए तो एस.जी.एस. इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक अध्ययन संस्थान, होल्कर विज्ञान, महात्मा गाँधी मेमोरियम मेडिकल कॉलेज, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, चोइथराम हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर जैसे बड़े संस्थान भी हैं.

रहन सहन

इंदौर शहर के लोगों का रहन सहन काफी सरल एवं उत्तम है. सर्दी गर्मी बरसात के अलावा यहां के लोगों का स्वभाव भी सामान्य रहता है यहां न तो अधिक ठंड पड़ती है ना ही अधिक गर्मी और ना ही ज्यादा बरसात. इसलिए रहने के लिए यहां का मौसम अनुकूल है. यहां की बोली मालवी है, लेकिन लोग हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं.

खानपान

खाने और खिलाने के लिए इंदौर शहर काफी फेमस है. इंदौर शहर में स्थित सराफा चौपाटी और 56 दुकान बाजार समेत कई ऐसे स्थान हैं, जहां पर लोग स्वादिष्ट नए नए व्यंजनों का स्वाद लेते हैं. यहां खासतौर पोहा, जलेबी और नमकीन देश दुनिया में प्रसिद्ध है.

पर्यटन

मध्यप्रदेश में सबसे बड़ा शहर इंदौर है, जहां पर कई ऐतिहासिक इमारतें जो पुरानी धरोहर को अपने आप में संजो कर रखी हुई हैं. इंदौर शहर मध्यकाल में होल्कर राजवंश की राजधानी हुआ करता था. अभी भी इस वंश से संबंधित कई भावनाओं को यहां पर देखा जा सकता है. अन्नपूर्णा मंदिर यहां का प्रमुख स्थल है, जहां पर व्यक्ति अधिक संख्या में जाते हैं. इंदौर शहर में कई महल हैं, लेकिन सबसे प्रसिद्ध राजवाड़ा है, जिसे इंदौर के आकर्षण का केंद्र माना जाता है. इसके अलावा कांच मंदिर, लालबाग, कृष्णपुरा छत्री, सात मंजिला भव्य होल्कर राजवाड़ा महल जिसका अब सिर्फ अग्रभाग ही बचा हुआ है. बड़ा गणपति की 7.62 मीटर ऊंची बैठी हुई मूर्ति सबसे प्रसिद्ध है. इसके अलावा खजराना गणेश मंदिर देश दुनिया में इंदौर को अलग पहचान दिलाता है.

सफाई में नंबर वन इंदौर

इंदौर देश का सबसे साफ शहर है. सफाई में लगातार सिरमौर बना हुआ है. ये यहां के लोगों की सफाई के प्रति जागरुकता और समर्पण की मिसाल है. इस शहर में कचरा फेंकने का मन नहीं करता है. इंदौर देश के रहने लायक शहरों की टॉप टेन सूची में भी शामिल है.

ये हैं इंदौर में घूमने के बेस्ट टूरिस्ट स्पॉट्स, सैर के दौरान जरूर करें इन ऐतिहासिक इमारतों का दीदार

राजवाड़ा पैलेस की सैर

इंदौर के सात मंजिला राजवाड़ा पैलेस का निर्माण 1766 में होलकर वंश के राजा ने करवाया था. हालांकि, मराठाओं के अलावा भी राजवाड़ा पैलेस में मुगलों और फ्रेंच की वास्तुकला भी देखने को मिलती है. वहीं, राजवाड़ा पैलेस की ऊपरी मंजिलें लकड़ी से बनी होने के कारण ये महल पयर्टकों में काफी मशहूर है. साथ ही रोज रात को यहां आयोजित होने वाला लाइट एंड साउंड शो भी कई टूरिस्ट को अपनी तरफ आकर्षित करता है.

लाल बाग पैलेस को करें एक्सप्लोर

इंदौर में स्थित लाल बाग पैलेस का निर्माण महाराज शिवाजी राव ने 1886 से 1921 के बीच में करवाया था. ये पैलेस दीवारों पर खूबसूरत नक्काशी और मार्बल की फर्श के लिए जाना जाता है. हालांकि, एक समय में मराठाओं का निवास स्थान रहा लाल बाग पैलेस का नाम अब मध्य प्रदेश के बेस्ट म्यूजियम में गिना जाता है. वहीं, लाल बाग पैलेस का मेन गेट काफी हद तक लंदन के बंकिघम पैलेस से मिलता-जुलता है.

कृष्णापुरा छत्री का दीदार

कृष्णापुरा छत्री का नाम भी इंदौर की ऐतिहासिक जगहों में से एक है. होल्कर मराठाओं की विरासत इस जगह पर तीन छत्रियां और पांच कब्रें मौजूद हैं. बता दें कि मौत के बाद होल्कर वंश के सदस्यों से जुड़े अवशेषों को छत्री कहा जाता था. वहीं, कृष्णापुरा छत्री में सभी छत्रियां पत्थर से निर्मित हैं. साथ ही यहां आप महारानी कृष्ण बाई के लिए बनाए गए कृष्ण मंदिर का भी दीदार कर सकते हैं.

गांधी हॉल घूमें

इंदौर के फेमस टूरिस्ट स्पॉट में मौजूद गांधी हॉल को 1904 में बनवाया गया था. इंडो-गोथिक स्टाइल में बनी इस इमारत का नाम एडवर्ड हॉल था, जिसका उद्घाटन ब्रिटेन के राजकुमार जॉर्ज फाइव ने किया था. वहीं, आजादी के बाद एडवर्ड हॉल का नाम बदलकर गांधी हॉल कर दिया गया था. इंदौर का गांधी हॉल आज भी दीवारों की आलीशान नक्काशी और कल्चरल आर्ट एग्जीबिशन के लिए मशहूर है.

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका

भारत एक विशाल और बहुआयामी राष्ट्र है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, किंतु उनमें से हिन्दी का स्थान विशेष है। हिन्दी केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परम्परा और राष्ट्रीय अस्मिता का जीता-जागता प्रतीक है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास अर्थात् शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, समाज और संस्कृति—सभी क्षेत्रों में हिन्दी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। जब शिक्षा मातृभाषा या सहज भाषा में दी जाती है, तब विद्यार्थी न केवल ज्ञान को सरलता से आत्मसात करते हैं बल्कि रचनात्मक सोच भी विकसित करते हैं। हिन्दी में विज्ञान, गणित, तकनीक और शोध को प्रस्तुत करने से यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सकता है। इससे ग्रामीण और साधारण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी भी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में समान रूप से भागीदार बनते हैं।

प्रशासन और न्यायपालिका में हिन्दी

हिन्दी राजभाषा के रूप में शासन-प्रशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि प्रशासनिक कार्यवाही हिन्दी में हो, तो सामान्य नागरिक आसानी से शासन की नीतियों और अधिकारों को समझ सकता है। न्यायपालिका में भी हिन्दी का प्रयोग जनता और न्यायालय के बीच की दूरी को कम करता है। इससे लोकतंत्र अधिक सशक्त और प्रभावी बनता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि

हिन्दी समाज और संस्कृति को जोड़ने वाली सशक्त कड़ी है। यह विभिन्न प्रान्तों और भाषाई समूहों को एक सूत्र में बाँधती है। हिन्दी साहित्य, कविता, उपन्यास और नाटक समाज को नई दिशा देते हैं। पत्रकारिता और सिनेमा के माध्यम से हिन्दी न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन का भी साधन बनती है।

आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी

वर्तमान युग ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी उन्नति का है। यदि आधुनिक तकनीक और व्यापारिक गतिविधियों को हिन्दी में प्रस्तुत किया जाए, तो यह देश की विशाल जनसंख्या तक पहुँचेगा और उन्हें प्रगति के अवसर देगा। इस प्रकार हिन्दी आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम बन सकती है।

राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान

हिन्दी विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों को जोड़ते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रबल करती है। यह भारतीयों को अपनी जड़ों और परम्पराओं से जोड़े रखती है। साथ ही, आज हिन्दी का वैश्विक स्तर पर भी प्रभाव बढ़ रहा है। विदेशों में बसे भारतीयों और विदेशी विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी सीखने से यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की पहचान को मजबूत कर रही है।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका अत्यन्त व्यापक और गहन है। यह केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा, प्रशासन, समाज, संस्कृति, तकनीक और वैश्विक पहचानसभी क्षेत्रों की प्रगति की आधारशिल है। यदि हम हिन्दी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी बनाएँ, तो भारत न केवल आन्तरिक रूप से सशक्त होगा, बल्कि विश्व पटल पर भी एक संगठित, प्रगतिशील और प्रभावशाली राष्ट्र के रूप में उभरेगा।

स्वप्निल गायकवाड़
व्यवसाय प्रबन्धक
व्यावसायिक कार्यालय – होशंगाबाद

स्वैच्छिक और अनिवार्य

स्वेच्छा से जो काम करें,
मन में उमंग, हृदय में धरे।
देश का हित, समाज की शान,
स्वेच्छा बने सबका अरमान।

पर कुछ कर्तव्य ऐसे होते,
जो निभाना अनिवार्य होते।
नागरिक धर्म, जन की सेवा,
इनसे ही उज्ज्वल हो देवा।

स्वेच्छा प्रेरणा जगाती है,
अनिवार्यता राह दिखाती है।
दोनों मिलकर दें संदेश,
कर्तव्य से ही बढ़े देश।

"स्वेच्छा से प्रेरणा लो, अनिवार्य कर्तव्य निभाओ – राष्ट्र निर्माण की राह सजाओ।"

हेमंत रंगशाही
सहायक प्रबन्धक
तृ॰ प॰ प्रकोष्ठ

नदी

सीखो सीख नदी से, यारों, बहते जाना।
न रुकना, न ठहरना, न बनाना ठौर-ठिकाना।।
देखो इसका त्याग और समर्पण, सब कुछ है औरों पर अर्पण
जहाँ-जहाँ से ये बहती है, नया सृजन ही करती है
खुद चट्टानों से टकराकर, औरों के लिए राह बनाती है
चाहे जितनी बाधाएं हो, बस बहती ही जाती है
सिंचित करके शुष्क धरा को, मरु को भी ये हरा कर देती है
हरी भरी लहराती फसलें, हरी घास के गलीचे बिछाती है
नदी घाटियाँ और वादियाँ, फल-फूलों से भर देती है
सब जीवों की प्यास मिटाती, ये हर लेती सबका ताप
इसके लिए सभी हैं बराबर, चाहे कोई पुण्य करे या पाप
क्षमा करती है सबकी भूल, चाहे कांटा हो या कोई फूल
अंत में मिल जाती है सागर में, और हो जाती है गुमनाम
जीवन भी हो नदी के जैसा, आए सदा भलाई के काम।

अतुल द्विवेदी
वरिष्ठ सहायक
व्या॰ का॰ हरदा

"" स्वच्छता दिवस 2025 (Swachhata Diwas 2025) मुख्य रूप से 2 अक्टूबर 2025 को गांधी जयंती के अवसर पर मनाया गया, जो सेवा स्वच्छता ही"2025" (SHS-2025) अभियान के समापन का प्रतीक था, जिसमें 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता गतिविधियों पर जोर दिया गया था, जिसका उद्देश्य 'स्वच्छोत्सव' के माध्यम से स्वच्छ भारत मिशन को नई ऊर्जा देना और 'एक दिन, एक घंटा, एक साथ' जैसे श्रमदान कार्यक्रमों के माध्यम से स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना था । ""

कर्मयोगी

एक व्यक्ति ने वर्षों तक एक पैर पर खड़े होकर कड़ी तपस्या की । जिससे भगवान प्रकट हुए और बोले, "वत्स ! वर मांगों " । वह हाथ जोड़ कर बोला, " क्षमा करना प्रभु ! मुझे वर नहीं चाहिए । "

भगवान हैरान होकर प्रश्नवाचक निगाहों से उसके चहरे की तरफ देखने लगे । वह भगवान की निगाहों का तात्पर्य समझकर उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए विनम्रता से बोला, "हे, प्रभु ! मुझे वर नहीं चाहिए क्योंकि मुझे आपके दर्शन करने मे अब जो आनंद प्राप्त हुआ है । वह आनंद अगर आपके दर्शन बिना किसी परिश्रम के सहजता से हो जाते तो कभी न मिलता । अतः मै जीवन की हर आवश्यकता को कड़ी मेहनत से प्राप्त करना चाहता हूँ, न कि किसी वरदान से या शक्ति से ।

युगों में पहली बार ऐसे कर्मयोगी के दर्शन करके अपने आप को धन्य समझकर भगवान देवलोक वापस लौट गए ।

भास्कर बघेल

सहायक प्रबन्धक

आंतरिक अंकेक्षण विभाग

अखिल भारतीय हिन्दी अधिकारी सम्मेलन

25-26 अगस्त 2025

राजभाषा विभाग प्रधान कार्यालय द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालय मे पदस्थ हिन्दी अधिकारियों को प्रोत्साहित व मार्गदर्शित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय हिन्दी अधिकारी सम्मेलन का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य प्रबन्धक महोदय श्री छोटूराम जी एवं उपमहाप्रबंधक श्री वतसलनाथ जी द्वारा की गई । राजभाषा विभाग प्रधान कार्यालय से डॉ॰ राजेश कुमार (मुख्य प्रबन्धक) श्री रवीन्द्र रात्रा (प्रबन्धक) एवं श्री विनोद कुमार (प्रबन्धक) आयोजक के तौर पर उपस्थित रहे। राजभाषा हिन्दी के प्रगति के संबंध मे निम्नानुसार विषय मुख्य रहे ।

- विशेष रूप से धारा-3 (3) के अनुपालन, राजभाषा नियम-5, राजभाषा नियम-11 और 'क' 'ख' 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों से हिन्दी में पत्राचार के वार्षिक निर्धारित लक्ष्य पर चर्चा की गई।
- धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी 14 दस्तावेज़ अनिवार्य रूप से हिन्दी व अङ्ग्रेज़ी द्विभाषी ही रखे जाए ।
- राजभाषा नियम 5 का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए एवं पत्राचार के शत प्रतिशत के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयास करने चाहिए ।
- मैनुअल, कोड, फार्म प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद मे सभी क्षेत्रों के लिए शत प्रतिशत लक्ष्य निर्धारित है ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठक प्रत्येक तिमाही मे नियमित रूप से आयोजित की जाए ।
- कार्यालय जहां 80% से अधिक कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन शाखाओं को नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित करने के प्रयास किए जाए ।

प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र मे उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय को अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । जिसमे क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर को 'क' क्षेत्र के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं° लि°, प्रधान कार्यालय, तकनीकी-विधि विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर को वर्ष 2024-25 के लिए पश्चिम-दक्षिण क्षेत्र मे STAR PERFORMER RO के रूप मे पुरस्कृत किया गया ।

सुकून है

जाड़ों की निष्ठुरता मे पथिक को मिलता अलाव में सुकून है .....
तपती धरती और सूरज यहाँ छांव में सुकून है ॥

कश्मकश के इस जीवन में चाय की चुस्की सुकून है .....
दौड़ती भागती ज़िंदगी में पूरी नींद एक सुकून है ॥

चमचमाते दिखावों के बाज़ार में सादगी एक सुकून है .....
निरर्थक गप्पों के शोरगूल में मेरी खामोशी भी सुकून है ॥

निराशा के तम गर घिरें तो मुस्कराहट एक सुकून है .....
कठिन डगर के अकेलेपन में दोस्त से बातें एक सुकून है ॥

ढूँढने गर निकलो तो शायद कहीं सुकून न मिले .....
थम कर देखों तो ख़ुद अपने में सुकून है ॥

सतीश साकेत
सहायक प्रबन्धक
विधि विभाग – भोपाल

जीवन का संतुलन

दुनिया चलती है
अच्छे और बुरे
के बीच

संबंध सांस लेते है
स्वीकार और समझ
के बीच

प्रकृति बहती है
दिन और रात
के बीच

राष्ट्र टिके रहते है
युद्ध और शांति
के बीच

ओ ! मानव
इस सबके बीच
जो छुपा है

उसे ही
कहते है बुद्धि ।

शोबा एग्नेश्वरन
सहायक प्रबन्धक
स्वास्थ्य विभाग
क्षे॰ का॰ इंदौर

दस्तक उम्मीदों की

नगर का चौराहा .....
लाल बत्ती पर गाडियाँ थमती है और उसी के साथ सुनाई देती है एक नन्ही हथेली की कोमल दस्तक । यह दस्तक है "मीरा" की, दस बरस की उस बच्ची की , जिसके मासूम कंधों पर उम्र से भारी जिम्मेदारियाँ है ।

कभी फूलों की टोकरी , कभी रंगीन पेन, कभी तिरंगा झण्डा , वह मौसम और त्योहार के संग अपना संसार बदलती है । पर उसका अपना घर, सजावट और उजाले का नहीं बल्कि अँधेरों और अधूरी उम्मीदों का घर है ।

वह देखती है ऊंची इमारते , बड़ी गाडियाँ , वह देखती है गाड़ियों मे बैठे हमउम्र बच्चे , हंसते खिलखिलाते , महंगे कपड़ों में सजे ।

हर मुस्कान में एक दुनियाँ होती है, जिससे उसका बचपन दूर खिसकता जाता है । उसकी आँखों में एक टीस उठती है, मानो कोई पूछ रहा हो , " क्यों तुम्हारा बचपन सड़कों की धूल में खो गया ? "

लेकिन उसकी आँखों में आँसूओं के साथ सपनों की उजली किरण भी चमकती है । वह मुस्कराती है क्योंकि उसके हृदय मे विश्वास है भगवान और मेहनत साथ है तो यह अंधेरा स्थायी नहीं है । एक दिन वही अपनी तकदीर बदलेगी , परिवार को रोशनी देगी और समाज मे यह प्रयास करेगी कि कोई और मासूम "मीरा " इस दर्द की राह पर न चले ।

मीरा जानती है उसकी हर दस्तक केवल बिक्री नहीं बल्कि संघर्ष का स्वर है , और भविष्य का वह फूल जो एक दिन पूरे समाज की आत्मा को हिला देगी ।

आकाश खरे
सहायक प्रबन्धक
सूचना प्रोद्योगिकी विभाग
क्षे॰ का॰ इंदौर

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी शब्द-सिंधु का परिचय

शब्द-सिंधु: शब्दों का महासागर

हिंदी शब्द-सिंधु, भारत सरकार की वह महत्त्वपूर्ण पहल है, जिसे राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (शिक्षा मंत्रालय) ने मिलकर साकार किया है। यह एक विशाल ऑनलाइन शब्दकोश है, जिसमें सात लाख से भी अधिक शब्द संजोए गए हैं। इसमें केवल सामान्य हिंदी शब्द ही नहीं, बल्कि पर्यायवाची, विलोम, मुहावरे और आधुनिक विज्ञान-प्रौद्योगिकी के पारिभाषिक शब्द भी समाहित हैं। इस पहल का लक्ष्य हिंदी को समृद्ध और आधुनिक स्वरूप प्रदान करना है, साथ ही भारतीय भाषाओं के बीच साझा शब्द-संपदा का सेतु भी निर्मित करना है।

यह शब्द-भंडार वास्तव में एक अथाह सागर है—जहाँ विविध भाषाओं, बोलियों, विज्ञान और संस्कृति की अनगिनत धाराएँ मिलकर एक अखंड प्रवाह रचती हैं। यह प्रवाह निरंतर गतिशील है, जिसमें प्रत्येक नया शब्द एक लहर बनकर जुड़ता है और हिंदी को और अधिक जीवंत, व्यापक तथा भविष्यमुखी बनाता है।

देश को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है और वह भाषा है हिन्दी।

- सेठ गोविंददास

वो बेफ़िकर सी मैं

घास पर नंगे पाँव दौड़ती , हवा में बाल उड़ाती
सपनों का घर बनाती गुड़ियों को गले लगाती
हर दिन नई कहानी, हर शाम नई हंसी
बारिश में भीगना , धूप में सोना
कुछ भी सोचने की जरूरत न थी

जब किशोर उम्र ने दस्तक दी
छोटी-छोटी खुशियाँ और बड़ी सी जिज्ञासाएँ जागी
दोस्तों के संग हुई बातें मीठी
मोहब्बत की आहट सुनी
और ख़ुद को ढूंढते हुए
गलतियों से पहचान हुई

जवानी आई , सफर ने मोड़ लिया
ख़ुद को पहचानने ,सपनों को पूरा करने का जोश आया
सपनों के लिए की कड़ी मेहनत
चुनौतियों से लड़ना सीखा
और जिम्मेदारियों का बोझ यू हीं धीरे धीरे बढ़ता गया

विवाह की देहरी पर जब कदम रखा
नई दुनियाँ, नए रिश्ते, नए धर्म और संस्कार देखा
सपनों के साथ अनगिनत जिम्मेदारियाँ को पाया
पर उस बेफ़िकर हंसी को तो अभी भी न खोया

माँ बनाना तो वरदान है
जीवन को देता अर्थ और मान है
छोटी नन्ही आँखों में अपना प्रतिबिंब देखा
हर थकान में मिठास, हर कठिनाई मे प्यार पाया
अब मेरे फैसले केवल मेरे नहीं
हर कदम में उसकी सुरक्षा और खुशी का ख्याल आया

लेकिन....
जैसे अंधेरी चादर बढ़ती
मै अपनी यादों मे समाती
जहां बचपन की वो दौड़ थी
पाँव मे मिट्टी गीली थी
हवा मे उड़ते बाल होते
फिकर किसी की न होती
वो बेफ़िकर हंसी ...

जो आज जिम्मेदारियों को जाना
तो समझ मे आया

बचपन की बेफिक्री अद्भुत थी
जवानी की आज़ादी अनमोल थी
और माँ बनने की ज़िम्मेदारी सबसे बड़ी
पर हर उम्र की खूबसूरती अलग थी
हर पल ने मुझे बनाया वही

वो बेफ़िकर सी मैं
आज भी भीतर कहीं मुस्कराती है

स्वाति सोनी
सहायक प्रबन्धक
नॉन-मोटर एस. वी. सी.
क्षे॰ का॰ इंदौर

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।
- देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

नारी सशक्तिकरण

नारी तुम अबला नहीं , सबला हो

तुम द्वापर की द्रौपदी नहीं

तुम तो कलयुग की काली हो

तुम सृजन की शक्ति ही नहीं

इस मानवजाति का अस्तित्व हो

उठों , खड़े होकर दिखा दो सबको

कि तुम इस संसार कि धुरी हो

खात्मा कर दो उन दरिंदों का

जो बहन-बेटियों को सताते है

बता दो जन-जन को

कि नारी की तुलना संभव नहीं

आज की तुम आधुनिक नारी हो

तुम आसक्त, आत्मनिर्भर व स्वाभिमानी हो

तुम ममता की मूर्त ही नहीं

तुम दुर्गा, सीता और शक्ति हो

नारी तुम अबला नहीं, सबला हो

अंजु अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक
लेखा विभाग
क्षे॰ का॰ इंदौर

माँ

कहने को तो बहुत
छोटा सा शब्द है माँ

पर जब खोजा तो
जमीं –आसमां मे छुपा हुआ था माँ

कमतर थे
नहीं जानते थे
क्या होती है माँ
बड़े हुए तो जाना
मेरी आत्मा में ही छुपा हुआ था माँ

जब पास थे तेरे
समझ न सके ममता को
दूर होने पर जाना
मेरी हर मासूमियत मे ही
छुपा हुआ था माँ

कितने ही शब्द लिख दे
पर तेरे लिए
शब्द कम है माँ
क्योंकि ...
दुनियाँ को रचने वाले 'परमात्मा'
मे भी तेरा अंश है माँ

रूपेश जैन
सहायक प्रबन्धक
लेखा विभाग
क्षे॰ का॰ इंदौर

अखिल भारतीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

भारत की प्रगति मे महिला की भूमिका

हमारी भारतीय संस्कृति बहुत प्राचीन है और आदिकाल से महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है| पुराणों मे भी इसके सबूत उपलब्ध है| भारत की प्रगति में महिलाओं की भूमिका विविध, बहुआयामी और महत्वपूर्ण है । आज महिलाएं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं| महिलाएं आज खेती-बाड़ी से लेकर आईटी और अंतरिक्ष तक विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ काम कर रही हैं। डिजिटल बैंकिंग, आधार-लिंक्ड सेवाओं और मोबाइल वॉलेट के प्रसार से महिलाओं की वित्तीय एजेंसी बढ़ी है। मुद्रण ऋणों और प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं ने उद्यमिता में सक्रिय रूप से भाग लिया है। महिलाएं संस्कृति, संस्कार और परंपराओं की संरक्षिका होती हैं, जो उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करती हैं। महिलाएं परिवार की मुख्य धुरी होती हैं और गृहणी के रूप में समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभाती हैं।पंचायत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक, महिलाएं सरपंच, मुखिया और सांसद के रूप में राजनीतिक भूमिका निभा रही हैं।

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए है। पुरातन काल मे भी महिलाएँ हर क्षेत्र मे छाई थी। अहिल्याबाई होलकर से लेकर रानी लक्ष्मीबाई तक ने अपना परचम लहराया था। हमारी वित्तमंत्री श्रीमति निर्मला सीतरमन हम सबके लिए प्रेरणश्रोत है। आज भारत कि अर्थव्यवस्था का उत्थान उनके प्रयासों की ही देन है।

महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865-1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक रही है। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एम.सी. मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है – अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी शोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ और नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड-अप इंडिया, और स्टार्ट-अप संबंधी कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों, की सुविधा प्रदान करता है।

महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्रों मे पावं रखने के लिए महिला स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण है। अब महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी 2030 तक लगभग 150-170 मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबुती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अभियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी।

मनीषा पाटील
उपप्रबंधक (नॉन-मोटर एस. वी. सी.)

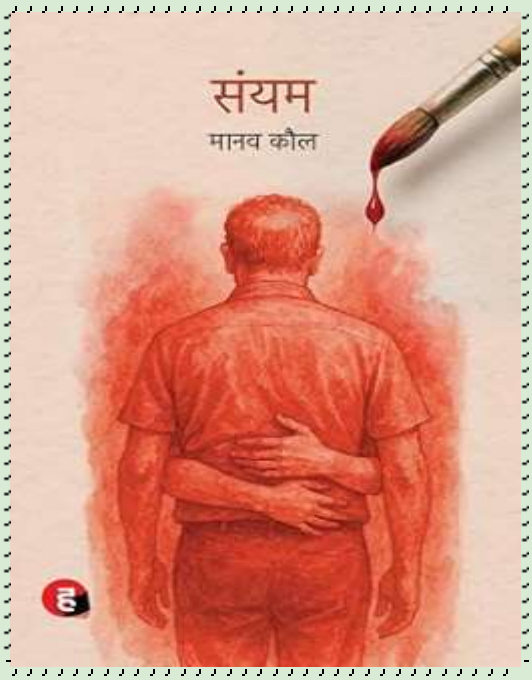

'हर पेंटिंग अपने भीतर एक चुप्पी छुपाए रखती है — और हर कलाकार, एक छुपी हुई कथा।'संयम एक ऐसे पेंटर की कहानी है, जो जीवन की भीड़ में भीतर से बिल्कुल अकेला है।
वह रंगों से अपनी दुनिया बनाता है, लेकिन जब वे भी चुप हो जाते हैं, तो उसे शब्दों का सहारा लेना पड़ता है।उसकी एक दोस्त उसे कहती है—"लिखो। जो तुमने महसूस किया, जो कह नहीं पाए—उसे लिखो।"यह उपन्यास उसी आत्म-संवाद की यात्रा है।यह केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि एक चित्रकार के भीतर की वह आवाज़ है, जो कभी पेंटिंग के ज़रिए नहीं निकल पाई।यह उस गहरी खामोशी की भाषा है, जिसे हम सब कभी न कभी महसूस करते हैं—चाहे हम कलाकार हों या नहीं।क्या एक लेखक एक पेंटर को समझ सकता है? क्या हम कभी किसी के रंगों की भाषा पढ़ सकते हैं? यही प्रश्न इस किताब के हर पन्ने में झलकता है।
संयम मानव कौल का सबसे आत्मिक और अंतरंग उपन्यास है—जहाँ कैनवास शब्द बन जाता है, और अकेलापन कहानी।

पाखंड

मान कर आध्यात्म मास , करता है तू उपवास को ,
अगले ही दिन पर भोग करता है पशु के मास को ।

वे कष्ट हरेंगे, सोचकर तू देखता है पत्थर शिला,
तुष्ट भला होगा तू कैसे अशक्त है जिसके माता पिता ।

स्नान तू करता ही है , छु ले जो राज शमशान का ,
निर्बलों को है काट मारता दे दुहाई विधान का ।

प्राण प्रतिष्ठा कर बनाता, तू प्रतिमा को साक्षात है ,
फिर उसी के स्वरूप को, तू पंहुचता आघात है ।

आर्य यदि तू श्रेष्ठ है, बुद्धिमत्ता अगर अखंड है,
करता क्यों ऐसा दुराचार, कैसा ये पाखंड है ।

उत्पल नयन प्रकाश
व्यावसायिक कार्यालय प्रमुख
व्यावसायिक कार्यालय – ग्वालियर

बेटी

आजकल यूं तो बहुत विकसित हुए है बस्तियाँ,
गाडियाँ महंगी हुई सस्ती हुई है बेटियाँ

बेटियों की जिंदगी मे आजकल बदलाव है ,
मर गई संवेदनाएँ, मर गया सद्भाव है ।
पूजते थे सब कभी बोलकर कन्या इन्हे ,
आजकल अब भेड़ियों की दृष्टि ही दल रहे
कोई रिश्ता आजकल शुद्धता का है नहीं
क्रूरता ही क्रूरता है इनके लिए सब कहीं ।

सब मिटा देना चाहते है आज इनकी हस्तियाँ ,
गाडियाँ महंगी हुई सस्ती हुई बेटियाँ

आज बेटी हो गई वस्तु बाज़ार की
सह रही है पीर धन की और हत्या व्यापार की
हाय इस पर कोई करुणा भी नहीं कर पा रहा
कोई इसको दलदलों से खींच कर न ला रहा
आबरू को लूटने ही सब उतारूँ लग रहे
और इसकी भोली भली आत्मा को ठग रहे ।

सब डुबाना चाहते है आज इसकी कश्तीयां
गाडियाँ महंगी हुई सस्ती हुई है बेटियाँ

क्या समय को रूप इसका याद अब बिलकुल नहीं
यह कश्ती कभी माता कभी बिटियाँ रही
यह जगत को दानवों से मुक्त भी करती रही
देवताओं तक की सारी मुश्किले हरती रही
यह कहानी लिख चुकी कितनी दफा उद्धार की
क्रोध की फिर नाश की फिर सृजन की और प्यार की

आज तक हम पूजते आए है इसकी मूर्तियाँ
गाडियाँ महंगी हुई सस्ती हुई है बेटियाँ

विक्रम सिंह
व्यावसायिक कार्यालय प्रमुख
व्यावसायिक कार्यालय – रायसेन

वित्तीय वर्ष 2025-26 के तहत क्षेत्रीय कार्यालय व अधीनस्थ कार्यालयों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मे क्षे॰ का॰ इंदौर व अधीनस्थ कार्यालयों की प्रतिभागिता

नराकास (कार्यालय) खरगोन मे कार्यालय प्रमुख ज़ाकिर खान

नराकास (बैंक) भोपाल मे कार्यालय प्रमुख श्री पुष्पेंद्र नामदेव

नराकास (उपक्रम) इंदौर मे कार्यालय प्रमुख श्री संजीब ऐड्डी उपमहाप्रबंधक

नराकास (कार्यालय) रतलाम मे श्री तरुण सिंह बागड़ी

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी का 79वां स्थापना दिवस मनाया गया

6pm प्रतिनिधि

इंदौर। प्रधान कार्यालय, दिल्ली के आदेश अनुसार क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर में 79th व स्थापना दिवस उप प्रबंधक संजीव एड्डी, क्षेत्रीय प्रबंधक एल.एस. कन्नौज, तिलक राज के मार्गदर्शन में **बड़ी धूमधाम से मनाया गया।**

अतिथि संजय लुनावत अध्यक्ष, चेयरमैन व इन्दौर डिविजनल क्रिकेट एसोसिएशन और शांतिलाल वैध, जनरल मैनेजर, अवि एग्रो लिमिटेड का स्वागत उपप्रबंधक महोदय व क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केसी मोहने, राकेश गोठवाल, नितिन वकना, महेश गुप्ता, आकाश खरे, संजय बाथम, रामचंद्र परतेती, भारती गोरे, मनीषा पाटिल, दीपा सूर्यवंशी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पल्मी शिंदे द्वारा किया गया व आभार प्रदर्शन स्वाति सोनी मैडम द्वारा किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2025-26

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर सहित समस्त अधीनस्थ कार्यालयों मे दिनांक 14 से 28 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसके तहत प्रधान कार्यालय निर्देशानुसार अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय जी के साथ भारत सरकार गृह मंत्रालय द्वारा प्रेषित माननीय गृह मंत्री जी का हिन्दी दिवस पर विशेष संदेश का वाचन कर समस्त कार्मिको को हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया गया । इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय व व्यावसायिक कार्यालय स्तर पर कर्मचारियों/अधिकारियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

हिन्दी पखवाड़ा मुख्य व्यावसायिक कार्यालय इंदौर

हिन्दी पखवाड़ा क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर

हिन्दी पखवाड़ा व्यावसायिक कार्यालय रतलाम एवं राजबाड़ा इंदौर

नगर राजभाषा समितियों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं मे प्राप्त पुरस्कार

नराकास भोपाल द्वारा उत्कृष्ट कार्य हेतु विक्रम सिंह, सहायक प्रबन्धक को पुरस्कृत किया गया ।

नराकास भोपाल द्वारा प्रतियोगिता के विजेता होने पर स्वप्निल गायकवाड, सहायक प्रबन्धक को पुरस्कृत किया गया ।

नराकास इंदौर उपक्रम के तत्वावधान मे आयोजित हिन्दी भाषण प्रतियोगिता मे गिरीश खेते , सहायक प्रबन्धक द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया गया ।

नराकास इंदौर उपक्रम के तत्वावधान मे आयोजित हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता मे संजय बाथम, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा तृतीय स्थान प्राप्त किया गया ।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर का दिनांक 16.10.2025 को सफल निरीक्षण किया गया । राज्य मंत्री माननीय श्री भर्तृहरी महताब,उपाध्यक्ष , श्री श्रीरंग आप्पा बारणे,संयोजक एवं श्री सतीश कुमार गौतम,सह-संयोजक , संसदीय समिति की ओर से उपस्थित रहे । ओरिएंटल इंश्योरेंस कं॰ का प्रतिनिधित्व किया प्रधान कार्यालय से आदरणीय श्री छोटू राम , महा प्रबन्धक , श्री विनोद कुमार , प्रबन्धक (राजभाषा) एवं क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर से श्री संजीब ऐड्डी , उपमहाप्रबंधक , श्री तिलक राज, क्षेत्रीय प्रबन्धक एवं श्रीमती पम्मी शिंदे वासुरे, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) उपस्थित रहे ।

क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर मे सतर्कता जागरूकता सप्ताह

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी प्रधान कार्यकाल निर्देशानुसार सर्तकता सप्ताह अभियान के तहत क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर, में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एल. एस. कन्नौज जी, क्षेत्रीय प्रबंधक श्री तिलक राज जी एवं श्री जयतिलक जैन (सतर्कता अधिकारी) के नेतृत्व में सतर्कता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर की विविध गतिविधियां

संसदीय समिति निरीक्षण मे राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर की प्रदर्शिनी

महाप्रबंधक श्री छोटूराम जी द्वारा सांसद श्री ललवानी जी को सम्मान

नराकास इंदौर उपक्रम के तत्वावधान मे बी.पी.सी.ए.ल. द्वारा आयोजित हिन्दी भाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

नराकास इंदौर उपक्रम के तत्वावधान मे भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा आयोजित हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

नराकास भोपाल बैठक मे व्यावसायिक कार्यालय भोपाल

संसदीय समिति निरीक्षण मे क्षेत्रीय कार्यालय व प्रधान कार्यालय की टीम